पुनरावृत्ति कार्य पत्रिका के उत्तर

कक्षा–9

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–1

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. 1. (घ)	2. (घ)	3. (क)	4. (ग)	5. (घ)
2. 1. (घ)	2. (घ)	3. (घ)	4. (क)	5. (ग)

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–2

उत्तर–

1. (क) धन जीवन की आधारभूत आवश्यकता है, जिसके बिना कोई भी सुखी एवं सुविधावपूर्ण जीवन की कल्पना नहीं कर सकता है। हमें अपनी छोटी से छोटी आवश्यकता को पूरा करने के लिए धन की आवश्यकता होती है।

(ख) पहले समय में, एक प्रथा प्रचलन में थी, जिसे विनिमय प्रणाली कहा जाता था, जिसमें किसी को भी एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु प्राप्त हो जाती थी, हालाँकि अब इस आधुनिक संसार में प्रत्येक वस्तु या चीज़ को खरीदने के लिए केवल धन की आवश्यकता होती है।

(ग) आज हर आदमी व्यापार, अच्छी नौकरी, अच्छे व्यवसाय आदि के माध्यम से अधिक से अधिक धन कमाकर धनी होना चाहता है, ताकि वह आधुनिक समय की बढ़ती हुई सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। यद्यपि, बहुत कम लोगों को अपने करोड़पति बनने के सपने को पूरा करने का अवसर मिलता है, फिर भी धन को एकत्रित करने की लालसा तो हर व्यक्ति की होती ही है।

(घ) शहरी क्षेत्र में रहने वाले लोग ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगों से अधिक धन कमाते हैं, क्योंकि शहरी इलाकों के लोगों की तकनीकी तक पहुँच बहुत आसान होती है और उनके पास अधिक स्रोत होते हैं, जो उनकी धन कमाने की क्षमता को बढ़ाते हैं। इस कारण ग्रामीण क्षेत्र के लोग विकास के क्षेत्र में पिछड़ जाते हैं और शहरी क्षेत्र के

लोग अधिक विकसित हो जाते हैं।

(ङ) (क)

2. (क) हमारे राष्ट्रीय त्योहारों में स्वाधीनता दिवस का विशेष महत्व इसलिए है, क्योंकि इसी दिन हमें शताब्दियों की गुलामी के बंधन से मुक्ति मिली थी और इसी दिन हमने आज़ाद होकर अपने समाज और राष्ट्र को संभाला था।

(ख) जिस अंग्रेज़ी राज्य का कभी भी सूरज नहीं डूबता था, उसी ने हमें 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश सौंप दिया और हम आज़ाद हो गए। स्वतंत्रता दिवस हमें याद दिलाता है कि हमारा देश इसी दिन गुलामी की बेड़ियों से मुक्त हुआ था।

(ग) स्वतंत्रता का पूर्ण श्रेय गांधी जी को ही जाता है। अहिंसा और शांति के शस्त्र से लड़ने वाले गांधी ने अंग्रेज़ों को भारत भूमि छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। उन्होंने बिना रक्तपात के क्रांति ला दी। गांधी जी के नेतृत्व में पं. जवाहरलाल नेहरू सरीखे नेता भी इस क्रांति में कूद पड़े।

(घ) गांधी जी द्वारा चलाए गए आंदोलनों से लोगों ने अंग्रेज़ सरकार का बहिष्कार कर दिया। उन्होंने सरकारी नौकरियाँ छोड़ दीं, जेल गए और मृत्यु को हँसते-हँसते गले लगा लिया। अंत में खून रंग ले ही आया और अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना ही पड़ा।

(ङ) (ख)

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–3

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. 1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)

2. 1. (ग) 2. (ख)
3. (ग) 4. (क) 5. कथन (*i*), (*ii*) और (*iii*) सही हैं।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–4

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. 1. विपत्ति के समय शूरवीर विचलित नहीं होते, एक क्षण के लिए अपना धीरज नहीं खोते, कठिनाइयों में भी अपना मार्ग बना लेते हैं।

2. 'है कौन विघ्न ऐसा.....पत्थर पानी बन जाता है।' इन पंक्तियों

के द्वारा कवि कहना चाहते हैं कि जग में कोई ऐसी समस्या नहीं है, जो मनुष्य के मार्ग में बाधक बन सके। अपने परिश्रम के द्वारा व्यक्ति समस्त कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर सकता है।

3. विपत्ति कायर को विचलित करती है। शूरवीर विपत्ति से कभी विचलित नहीं होते।
4. 'बत्ती जो नहीं जलाता है, रोशनी नहीं वह पाता है' इस पंक्ति का आशय है–परिश्रम करनेवाला ही जीवन में सफल रहता है।
5. 'मेहँदी में जैसी लाली हो' उदाहरण द्वारा कवि मनुष्य के भीतर छुपे अनगिनत गुणों को व्यक्त कर रहा है।

2. 1. 'जब भी कर्ता हुआ·····कविता नया सूर्य गढ़ती है', पंक्तियों से यह भाव प्रकट होता है कि कार्य करनेवाला व्यक्ति जब अपने कर्तव्य से विमुख या अकर्मण्य हो जाता है, तब कविता उसे जीना सिखाती है। यात्रा से दूर हो चुके अर्थात शिथिल व्यक्ति को कविता चलना सिखलाती है।
2. जब सत्ता के मद में चूर होकर शासक कंस बन जाता है, तब कविता स्वयं कृष्ण बनकर उसका नाश करती है।
3. 'कविता सदा सृजन करती है' पंक्ति से आशय है–कविता हर परिस्थिति में सर्जक की भूमिका निभाती है।
4. 'शीलहरण होता कलियों का' पंक्ति में कवि छोटी बालिकाओं के प्रति होने वाले दुराचार का वर्णन कर रहा है।
5. 'परस्पर संबंधों में दूरियाँ बढ़ने लगी हैं', यह भाव कविता की–'यूँ गूँगे संबंध हो गए' पंक्ति से निकल रहा है।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–5

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग)	2. (ग)	3. (ख)	4. (ख)	5. (ख)
6. (ग)	7. (ख)	8. (घ)	9. (घ)	10. (ग)
11. (ख)	12. (ख)	13. (क)	14. (ग)	15. (घ)

16. (*i*), (*ii*) और (*iv*) सही हैं।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–6

1. 1. अधिकार, अध्यक्ष 2. दुर्लभ, दुर्दिन

2. 1. पठनीय, करणीय 2. कलाकार, पत्रकार

3. 1. 'तद्भव' उपसर्ग वे उपसर्ग हैं जिनका विकास संस्कृत के तत्सम उपसर्गों या समासों के पूर्व पदों से हुआ है। इन्हें हिंदी के उपसर्ग भी कहते हैं; जैसे–'अध' = अधपका, अधमरा आदि।

2. 'तद्धित प्रत्यय' वे प्रत्यय हैं जो क्रिया शब्दों के अलावा संज्ञा, विशेषण, अव्यय आदि में लगकर संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते हैं, जैसे– 'नी' = ओढ़नी, 'ई' = खेती आदि। (विस्तार के लिए पुस्तक देखें)

4. 1. **उपसर्ग** – 'वि' **मूल शब्द** – 'शिष्ट'

2. **उपसर्ग** – 'सु' **मूल शब्द** – 'आगत'

5. 1. **मूल शब्द** – 'चाचा' **प्रत्यय** – 'एरा'

2. **मूल शब्द** – 'खेवना' **प्रत्यय** – 'हार'

6. 1. **उपसर्ग** – अधि, **मूल शब्द** – कार, **प्रत्यय** – इक

2. **उपसर्ग** – परि, **मूल शब्द** – पक्व, **प्रत्यय** – ता

7. (ख) 8. (ग) 9. (घ) 10. (ग)

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–7

1. 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख)

2. 1. (क) 2. (ग) 3. (ग) 4. (ख) 5. (ख)

3. 1. (ग) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ख)
5. (ख) 6. (ग) 7. (घ) 8. (ग)
9. (ख) 10. (ग) 11. (ख) 12. (घ)

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–8

1.

समस्तपद	विग्रह-द्विगु समास	विग्रह-बहुव्रीहि समास
(क) अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समाहार	आठ अध्यायों से युक्त पुस्तक अर्थात पाणिनि द्वारा रचित पुस्तक का नाम
(ख) त्रिफला	तीन फलों का समाहार	तीन हैं फल जिसमें अर्थात विशेष औषधि
(ग) त्रिलोचन	तीन लोचन (नेत्र) का समाहार	तीन नेत्र हैं जिसके अर्थात शिव

2.

समस्तपद	विग्रह-कर्मधारय समास	विग्रह-बहुव्रीहि समास
(क) पीतांबर	पीत के समान अंबर	पीत अंबर (वस्त्र) वाला अर्थात श्रीकृष्ण
(ख) नीलकंठ	नीला है कंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव
(ग) कमलनयन	कमल के समान नयन	कमल के समान नयन हैं जिसके अर्थात श्रीराम

3.

समास-विग्रह	समास का नाम
(क) पीत है अंबर जिसका अर्थात श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि समास
(ख) चार मास (महीनों) का समाहार	द्विगु समास

4. (क) हमें बाढ़ से पीड़ित की सहायता करनी चाहिए।
(ख) शक्ति के अनुसार निर्धनों की सहायता करनी चाहिए।

5.

समस्तपद	समास का नाम
(क) गौशाला	संप्रदान तत्पुरुष समास
(ख) सतसई	द्विगु समास

6. (ग) 7. (ख)

पुनरावृत्ति कार्य पत्र-9

1. 1. (घ) 2. (ख) 3. (ख) 4. (घ) 5. (घ)
6. (ख)

2. 1. (ग) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ख) 5. (ख)
6. (ख)

3. (ख)

4. (ग)

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–10

उत्तर–

1. (*i*) कथनात्मक वाक्य

(*ii*) निषेधात्मक वाक्य

(*iii*) प्रश्नवाचक वाक्य

(*iv*) विस्मयादिबोधक वाक्य

(*v*) आज्ञार्थक वाक्य

(*vi*) इच्छार्थक वाक्य

(*vii*) निषेधात्मक जटिल वाक्य

(*viii*) संभावनार्थक निषेधात्मक वाक्य

2. (क) आज्ञार्थक जटिल वाक्य : (*i*) किताब खोलो और पाठ पढ़ो।

(*ii*) जल्दी आइए और यहाँ बैठ जाइए।

(ख) कथनात्मक जटिल वाक्य : (*i*) उसने साइकिल उठाई और बाज़ार की तरफ चला गया।

(*ii*) जो लोग नारे लगा रहे थे, वे सब झूठे हैं।

(ग) संकेतवाचक निषेधात्मक वाक्य : (*i*) अगर तुमने उसे न डाँटा होता तो वह न गई होती।

(*ii*) यदि तुम मुझसे बात नहीं करोगी तो भी मैं बुरा नहीं मानूँगा।

(घ) 'क्यों' अव्यय वाले (*i*) अब क्यों सुनेगा वह मेरी बात।

निषेधात्मक वाक्य : (*ii*) अब क्यों देगा वह तुम्हारे पैसे।

3. (*i*) अब वह तुम्हें मिलने से रहा।

(*ii*) उसने पहले नाश्ता किया, फिर बाज़ार गई।

(*iii*) इस समय दवाई नहीं मिलेगी।

(*iv*) यदि बारिश होगी तो किसान हल चलाएँगे।

(*v*) आप वहाँ न जाएँ।

(*vi*) शायद आज बारिश आए।

(*vii*) वाह! वह कितना परिश्रमी बालक है।

(*viii*) वे सब लोग मंदिर की ओर क्यों गए हैं?

4. (घ)

5. (ग)

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–11

उत्तर–

1.	1. (ग)	2. (ख)	3. (ख)	4. (ग)	5. (ग)
2.	1. (ख)	2. (घ)	3. (घ)	4. (घ)	5. (घ)
3.	1. (ख)	2. (ख)	3. (घ)	4. (ग)	5. (ख)
	6. (ख)	7. (ख)	8. (ख)	9. (क)	10. (ग)

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–12

उत्तर–

1. (क) उपमा तथा रूपक अलंकार में अंतर

उपमा	रूपक
1. प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत या उपमेय और उपमान के बीच समानता दिखाई जाती है; जैसे– 'पीपर पात सरिस मन डोला' अर्थात पीपल के पत्ते के समान मन डोलने लगा।	1. प्रस्तुत पर अप्रस्तुत का या उपमेय पर उपमान का आरोपण किया जाता है; जैसे– 'चरण-कमल बंदौ हरिराई'। कमल रूपी चरणों की वंदना की जा रही है।

2. उपमा के चार अंग होते हैं– (*i*) उपमेय (*ii*) उपमान (*iii*) वाचक शब्द (*iv*) साधारण धर्म	2. चूँकि प्रस्तुत पर अप्रस्तुत का आरोपण होता है, अतः केवल दो ही अंग होते हैं– (*i*) उपमेय (*ii*) उपमान

(ख) अनुप्रास तथा यमक अलंकार में अंतर

अनुप्रास	यमक
1. किसी कविता में समान वर्णों की यदि आवृत्ति होती है या समान वर्ण बार-बार आते हैं वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। जैसे– तरिन तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।	1. जबकि जिस कविता में शब्द की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है और हर बार उसका अर्थ भिन्न होता है, वहाँ यमक अलंकार होता है; जैसे– कनक-कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।

2. **शब्दालंकार वर्ग:** अनुप्रास, यमक, श्लेष
   अर्थालंकार वर्ग: उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण
3. **यमक** : 'कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय'
   रूपक : 'संतौ भाई, आई ज्ञान की आँधी रे'
   अनुप्रास : 'प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही'
   उपमा : 'वह नवनीलिनी-से नयनवाला कहाँ है।'
4.

	उपमेय	**उपमान**
(क)	मुख	शशि
(ख)	मन	पीपर पात

5. (क) यमक
   (ख) अनुप्रास
   (ग) उपमा
   (घ) रूपक

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–13

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–14

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–15

उत्तर–

1. प्रातःकालीन सैर के लाभों का वर्णन करते हुए अपने छोटे भाई को पत्र–

परीक्षा भवन

क०ख०ग० विद्यालय

नई दिल्ली

15 नवंबर, 20XX

प्रिय अमन

सस्नेह आशीष।

मैं यहाँ कुशल हूँ तथा आशा करता हूँ कि तुम भी वहाँ सकुशल तथा सानंद होगे। पिछले दिनों पिता जी के पत्र से ज्ञात हुआ कि तुम प्रातःकाल देर से उठते हो, इसलिए इन दिनों तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। सवेरे देर से उठने का कारण संभवतः तुम्हारा देर रात तक जगकर पढ़ना रहा हो। अमन, यह ठीक नहीं है। समय से सोना तथा समय पर जगना अच्छे स्वास्थ्य की आवश्यक शर्त है। यदि तुम इसको नज़रअंदाज़ करोगे तो तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। उसके साथ ही प्रातःकाल का भ्रमण भी ज़रूरी है। अमन, प्रातःकाल का भ्रमण अच्छे स्वास्थ्य का अचूक नुस्खा है। इसके लिए कोई पैसा खर्च करने की भी आवश्यकता नहीं होती।

प्रातःकाल पूर्व में सूर्योदय की लालिमा मन को अच्छी लगती है। इस समय

मंद-मंद बहती शीतल बयार सारा आलस्य हर लेती है। पक्षियों का कलरव हमारी नींद भगा देता है। ओसयुक्त घास पर चलने से मन प्रसन्न होता है तथा हमारे नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। खिले-खिले फूल हमें उल्लास एवं स्फूर्ति से भर देते हैं। प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों के स्वस्थ्य एवं दीर्घायु होने का रहस्य उनका ब्रह्ममुहूर्त में उठकर भ्रमण करना था। जो व्यक्ति नियमित प्रातःकाल भ्रमण करता है, वह कभी बीमार नहीं पड़ता। आशा है कि तुम भी प्रातःकाल नियमित रूप से भ्रमण करोगे। पूज्य माता एवं पिता जी को चरणस्पर्श कहना और पत्रोत्तर देना।

तुम्हारा अग्रज

य०र०ल०

अथवा

मित्र के घर हुई चोरी की खबर सुनकर उसको सांत्वना देते हुए पत्र–

परीक्षा भवन

क०ख०ग० विद्यालय

साकेत, नई दिल्ली

8 दिसंबर, 20XX

प्रिय मित्र मदन

सादर नमस्कार।

पिछले दिनों तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर बहुत ही दुख हुआ कि तुम्हारे घर चोरी हो गई है। चोर घर के लोगों की अनुपस्थिति में न केवल बहुमूल्य सामान उड़ा ले गए, बल्कि कुछ वैसे महत्वपूर्ण कागजात भी ले गए, जिनकी भरपाई बहुत ही मुश्किल है। मदन आजकल विधि-व्यवस्था बहुत ही खराब हो चुकी है तथा आए दिन चोरों के द्वारा इस तरह के कारनामें करने की खबरें अखबारों में आती रहती हैं। हमें इसके लिए हर पल सावधान रहना होगा। किंतु कभी-कभी इस तरह की घटनाएँ अपने स्तर पर सावधान रहने पर भी हो जाती हैं, जैसे तुम्हारे घर में हुआ।

चोरी की सूचना प्राप्तकर पुलिस अवश्य सक्रिय हुई होगी तथा हो सकता है कि चोरी हुए सामानों को बरामदगी भी हो जाए। इसलिए भरोसा रखने की ज़रूरत है। जो महत्वपूर्ण कागजात चोरी हो गए हैं, उनकी सूचना संबंधित

महकमें में दे दो तथा संभव हो तो उसकी नकल (कॉपी) भी निकलवा लो, ताकी भविष्य में किसी प्रकार की दिक्कत का सामना न करना पड़े।

मदन इस दुखद घटना पर चाचा-चाची जी का हौसला बनाए रखने में सहयोग करना तथा आगे से कभी घर से बाहर जाने से पहले उसकी सुरक्षा की पूरी सतर्कता बरतना। चाचा-चाची को मेरा प्रणाम तथा नमिता को मेरा स्नेहाशीष।

तुम्हारा मित्र

य०र०ल०

2. विद्यालय के पुस्तकालय में हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ मँगाए जाने हेतु पुस्तकालय अधीक्षक को पत्र–

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

12 अगस्त, 20XX

सेवा में

पुस्तकालय अधीशक

क०ख०ग० विद्यालय

आर०के० पुरम्, नई दिल्ली

विषय : पुस्तकालय में हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ मँगवाए जाने हेतु।

महोदय

मैं आपके विद्यालय में नौवीं 'अ' का छात्र हूँ। महोदय, आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मुझे विद्यालय में 'हिंदी सचिव' के रूप में कार्य करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। मैं चाहता हूँ कि हमारे विद्यालय के छात्र हिंदी की विभिन्न अंतर-विद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लें तथा पुरस्कार जीतकर अपने विद्यालय का नाम रोशन करें।

इसके लिए यह आवश्यक है कि पुस्तकालय में हिंदी की पर्याप्त पत्र-पत्रिकाएँ मँगाई जाएँ। इनके अध्ययन से छात्रों के ज्ञान का स्तर ऊपर उठेगा और वे न केवल अपने विषय में समर्थ बनेंगे बल्कि राष्ट्रभाषा के विकास में अपना सहयोग दे सकेंगे।

आशा है आप मेरे निवेदन पर गंभीरता से विचार करेंगे तथा हिंदी की स्तरीय पत्र-पत्रिकाएँ मँगाने संबंधी निर्देश शीघ्रताशीघ्र देंगे।

सधन्यवाद!

भवदीय

य०र०ल०

अथवा

ग्रीन फील्ड स्कूल, मुंबई द्वारा विज्ञापित हिंदी अध्यापक के पद के लिए आवेदक वसंत कुमार (बी०ए०, बी०एड०) की ओर से आवेदन पत्र–

अ०ब०स० कॉलोनी

नई दिल्ली

12 दिसंबर, 20XX

सेवा में

प्रधानाचार्य

ग्रीन फील्ड स्कूल

मुंबई

विषय : हिंदी अध्यापक के पद के लिए आवेदन-पत्र।

महोदय

दिनांक 10.05.20XX के दैनिक हिंदुस्तान में प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ है कि आपके विद्यालय में हिंदी अध्यापक का पद रिक्त है। प्रार्थी भी इस पद के लिए आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

नाम – वसंत कुमार

पिता का नाम – महेश्वर प्रसाद

जन्म-तिथि – 12.10.1990

शैक्षणिक योग्यताएँ–

X – सी०बी०एस०ई०–2006-प्रथम श्रेणी

XII – सी०बी०एस०ई०–2008-प्रथम श्रेणी

बी०ए० – दिल्ली विश्वविद्यालय–2011-प्रथम श्रेणी

बी०एड० – दिल्ली विश्वविद्यालय–2012-प्रथम श्रेणी

अनुभव – एक वर्ष तक हैप्पी पब्लिक स्कूल में शिक्षण का अनुभव।

आशा है कि मेरी योग्यताओं पर विचार करते हुए आप सेवा का अवसर अवश्य देंगे।

सधन्यवाद

प्रार्थी

वसंत कुमार

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–16

उत्तर–

1. आप 'बुक-फेयर' देखने गए, वहाँ आपने क्या-क्या किया, इसका वर्णन करते हुए अपने पिता जी को पत्र–

परीक्षा भवन

क०ख०ग० विद्यालय

सागरपुर, नई दिल्ली

5 अगस्त, 20XX

पूज्य पिता जी

सादर चरणस्पर्श।

आपका पत्र मिला। पढ़कर खुशी हुई कि आप सभी घर पर सकुशल हैं। पत्र का जवाब इसलिए नहीं दे सका क्योंकि तब मेरी परीक्षा समाप्त नहीं हुई थी। मुझे परीक्षा-फल का इंतजार था। सोचा कि परिणाम मिलते ही पत्र लिखूँगा।

पिता जी, पिछले दिनों मैं नई दिल्ली के प्रगति मैदान में 'अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला (इंटरनेशनल बुक फेयर)' देखने गया था। वहाँ मैंने विश्वभर से आए विभिन्न प्रकाशकों की बहुत सारी पुस्तकें देखीं। इनमें से कुछ पुस्तकें मैंने अपने लिए तथा कुछ आध्यात्मिक पुस्तकें आपके लिए भी खरीद रखी हैं। विश्वभर से आए विभिन्न प्रकाशकों के स्टॉलों पर कई दुर्लभ पुस्तकों को देखना सचमुच एक सुखद आश्चर्य की तरह था। यहाँ विभिन्न भाषाओं की लाखों पुस्तकें उपलब्ध थीं। इस बुक फेयर में खरीदी जानेवाली पुस्तकों पर 20% की छूट दी गई थी। इससे पुस्तक के खरीदारों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। पिता जी, विविध प्रकार की पुस्तकों का दिग्दर्शन करने का आकर्षण मुझ पर इतना ज्यादा था कि इस पुस्तक मेले को छोड़कर आने का मन ही नहीं करता था। किंतु समयाभाव के

कारण मुझे घर लौटना पड़ा। अगली बार जब पुस्तक मेले का आयोजन होगा तो मैं आपको बुलाऊँगा और इनमें ले चलूँगा। आपको बहुत ही आनंद आएगा।

घर में माता जी को प्रणाम तथा राजेश और राखी को शुभ आशीष बोलिएगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

य०र०ल०

अथवा

छोटी बहन के जन्मदिवस समारोह पर अपने मित्र को आमंत्रित करते हुए पत्र–

परीक्षा भवन

क०ख०ग० विद्यालय

दरियागंज, नई दिल्ली

15 जुलाई, 20XX

प्रिय मित्र नवीन

सादर नमस्कार।

मैं सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी कुशलतापूर्वक होगे। मित्र, बड़े ही हर्षपूर्वक मैं तुम्हें यह सूचित कर रहा हूँ कि दिनांक 17 दिसंबर, 20XX को मेरी छोटी बहन विमला का जन्मदिन है। मेरी इच्छा है कि इस जन्मदिन समारोह तुम अवश्य शामिल हो। इस अवसर पर तुम्हारे शामिल होने से हम सबको बेहद खुशी होगी। मेरी माँ और पिता जी ने खासतौर पर मुझे तुम्हें बुलाने को कहा है। आशा है कि तुम हम सबकी भावनाओं का आदर करते हुए जन्मदिन समारोह में अवश्य ही शामिल होगे।

घर में बड़ों को प्रणाम कहना तथा छोटों को शुभ आशीष देना।

तुम्हारा मित्र

य०र०ल०

2. विद्यालय में लड़कियों के लिए अलग शौचालय बनाए जाने का अनुरोध करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र–

परीक्षा भवन

क०ख०ग० विद्यालय

नई दिल्ली

21 अगस्त, 20XX

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय
क०ख०ग० विद्यालय
नई दिल्ली

विषय: लड़कियों के लिए अलग शौचालय बनाने के संबंध में।

महोदय

मैं विद्यालय की एक अहम समस्या की तरफ आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाहती हूँ। विद्यालय में हम लड़कियों के लिए अलग से शौचालय की व्यवस्था नहीं है, इससे हमें भारी असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। कई बार तो इस परेशानी के कारण हम लड़कियों को छुट्टी लेकर घर भी जाना पड़ जाता है। अत: अनुरोध है कि हमारी इन समस्याओं को देखते हुए विद्यालय में लड़कियों के लिए अलग शौचालय बनाने की कृपा की जाए। इसके लिए हम लड़कियाँ आपकी आभारी रहेंगी।

आपकी आज्ञाकारी शिष्या
य०र०ल०
IX 'अ', अनुक्रमांक.....

अथवा

आपके इलाके में गंदगी बढ़ जाने के कारण डेंगू फैल रहा है। उसकी रोकथाम किए जाने के संबंध में जिला स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र–

अ०ब०स० नगर
नई दिल्ली
17 नवंबर, 20XX
सेवा में
जिला स्वास्थ्य अधिकारी
दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली

विषय : इलाके में गंदगी के कारण डेंगू फैलने के संबंध में।

महोदय

मैं आपका ध्यान राजनगर आवासीय कॉलोनी की तरफ़ आकृष्ट करना चाहता हूँ, जहाँ कि गंदगी के कारण डेंगू का प्रकोप बड़ी तेज़ी से फैल रहा है। यहाँ आसपास अनधिकृत रूप से रहनेवाले लोग कूड़ा-कचरा का ढेर लगा देते हैं, जिसके कारण चारों तरफ़ गंदगी का साम्राज्य व्याप्त हो गया है। नगर निगम के सफाईकर्मी भी पिछले कई दिनों से हमारे इलाके में गंदगी साफ़ करने नहीं

आते। इससे स्थिति और भी भयावह हो गई है।

अत: आपसे अनुरोध है कि हमारे क्षेत्र में सफ़ाईकर्मियों को अविलंब भेजकर गंदगी हटवाकर तथा ब्लीचिंग पाउडर आदि का छिड़काव करवाकर इस इलाके को गंदगी मुक्त किया जाए, तभी यहाँ के निवासी चैन की साँस ले सकेंगे। उसके लिए हम क्षेत्रवासी आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित

भवदीय

य०र०ल०

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–17

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–18

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–19

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–20

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–21

उत्तर–

1. जी०एस०टी० के विषय में दो मित्रों के बीच होनेवाला संवाद।

विनय – हेलो, आनंद!

आनंद – हाय विनय! कैसे हो? इतनी सुबह फ़ोन किए, कोई विशेष बात है, क्या?

विनय – बिलकुल ठीक हूँ, लेकिन सरकार ने 1 जुलाई से जो जी०एस०टी० लागू किया है, उसका क्या तात्पर्य है?

आनंद – मित्र, जी०एस०टी० को हिंदी में 'वस्तु एवं सेवा कर' कहते हैं। इसको लागू करने का मुख्य उद्देश्य है करारोपण की प्रक्रिया को सहज एवं सरल बनाते हुए कर प्रणाली की जटिलता को कम करना। साथ-साथ सरकार के राजस्व में तीव्र वृद्धि करना।

विनय – यह सब जी०एस०टी० द्वारा कैसे संभव है?

आनंद – यह एक ऐसी कर प्रणाली है जो कि संपूर्ण देश में समान रूप से लागू होगी। इससे अलग-अलग राज्यों में एक वस्तु पर असमान करों से ग्राहक को छुटकारा मिलेगा। फलतः राष्ट्रीय कॉमन बाज़ार के निर्माण में मदद मिलेगी। इससे करों की अदायगी आसान होगी। फलतः राजस्व में वृद्धि होगी।

विनय – तुमने जी०एस०टी० समझने में मदद की इसके लिए धन्यवाद। इस विषय पर आगे फिर कभी बात करेंगे। नमस्कार।

2. विद्यालय के वार्षिकोत्सव की तैयारी के विषय में दो मित्रों के बीच होनेवाला संवाद।

भारत – हेलो, अमित!

अमित – हाय, भारत! कैसे हो?

भारत – बिलकुल ठीक हूँ। मैंने यह बताने के लिए तुम्हें फ़ोन किया कि विद्यालय की कार्यकारिणी समिति ने वार्षिकोत्सव को 'स्वर्ण जयंती' के रूप में मनाने का फैसला किया है। समिति ने तैयारी जल्द से जल्द पूरा करने के लिए कार्यों का विभाजन कल ही कर दिया। मुझे अभिभावकों को निमंत्रण-पत्र बँटवाने की जिम्मेदारी दी गई है। तुम्हें कौन-सा काम दिया गया है?

अमित – मित्र मुझे मंच की साज-सज्जा में लगाया गया है। मुश्किल तो ये है कि हमने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लिया है, जिसकी

तैयारी के लिए समय ही नहीं मिल पा रहा है।

भारत – मेरी भी यही हालत है। मैं भी रात-रात भर जागकर दर्पण के सामने खड़ा होकर अभ्यास कर रहा हूँ।

अमित – ठीक है भाई बाद में बात करेंगे। अभी समय नहीं है। नमस्कार।

भारत – नमस्कार।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–22

उत्तर–

1. 'परीक्षा की अवधि में बिजली कटौती' विषय पर दो मित्रों के बीच संवाद।

मनोज – क्या हाल-चाल है, मित्र?

मनोहर – ठीक हूँ, दोस्त! तुम कैसे हो?

मनोज – ठीक हूँ, किंतु परीक्षा के कारण थोड़ा दबाव में हूँ।

मनोहर – हाँ, यह तो है। इधर बिजली की भी स्थिति ठीक नहीं है। इससे पढ़ाई बाधित होती है।

मनोज – हाँ यार! बिजली की कटौती के कारण परीक्षा की तैयारी पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है।

मनोहर – बिलकुल! सरकार को हम छात्रों की समस्याओं पर गंभीरता से विचार करना चाहिए और परीक्षा की अवधि में बिजली की कटौती नहीं करनी चाहिए।

मनोज – तुम एकदम सही बोल रहे हो, मनोहर! यह हमारे भविष्य का प्रश्न है।

मनोहर – अच्छा, अब चला जाए मनोज! समय व्यर्थ करना ठीक नहीं है।

मनोज – हाँ, हाँ! चलो, अब कुछ पढ़ाई करते हैं।

2. स्कूल बस-स्टाफ की लापरवाही के विषय में दो मित्रों के बीच संवाद।

दिनेश – कैसे हो, रमण? सकुशल हो न?

रमण – हाँ, हाँ! आनंदित हूँ। तुम अपनी सुनाओ।

दिनेश – ठीक ही हूँ। पैर में थोड़ी-सी मोच आ गई है, इसलिए परेशान हूँ। दर्द भी है।

रमण – ओह! किसी डॉक्टर से दिखवा लो। किंतु यह हुआ कैसे?

दिनेश – क्या बताऊँ यार, स्कूल बस से उतर रहा था कि एकाएक ड्राइवर ने बस की रफ़्तार बढ़ा दी। मैं गिर पड़ा और पैर में चोट लग गई।

रमण – यह तो सरासर ड्राइवर की लापरवाही है। बिना आश्वस्त हुए कि सभी बच्चे बस से उतर गए हैं, ड्राइवर ये बस कैसे बढ़ा दी? यह तो गंभीर लापरवाही है।

दिनेश – हाँ यार, मैंने इसकी शिकायत प्रधानाचार्य से की है। इसी तरह की लापरवाही अक्सर बस के स्टॉफ द्वारा की जाती है।

रमण – तुमने बिलकुल ठीक किया। बिना कार्यवाही के ये सुधरने वाले नहीं हैं। चलो, अब कक्षा में चलते हैं।

दिनेश – हाँ, हाँ! चलो।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–23

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–24

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।